एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

वर्षा ऋतु में सब्जी वर्गीय फसलों की देखभाल

*डॉ. रमेश कुमार शर्मा, डॉ. राम बाबू रमन, डॉ. परमवीर सिंह, डॉ. अजय भारद्वाज एवं डॉ. अंकेश कुमार चंचल
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर (बिहार), भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: drramesharma@rediffmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि अर्थव्यवस्था का आधार मानी जाती है। कृषि क्षेत्र में सब्जी उत्पादन का विशेष महत्व है क्योंकि सब्जियाँ मानव आहार में आवश्यक पोषक तत्वों जैसे विटामिन, खनिज लवण, प्रोटीन तथा रेशे की पूर्ति करती हैं। वर्षा ऋतु (खरीफ मौसम) सब्जी उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस मौसम में पर्याप्त नमी और अनुकूल तापमान उपलब्ध होने के कारण विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती सफलतापूर्वक की जाती है। हालांकि, अत्यधिक वर्षा, जलभराव, खरपतवारों की वृद्धि, कीट एवं रोगों का प्रकोप किसानों के लिए गंभीर चुनौती बन जाते हैं। इसलिए वर्षा ऋतु में सब्जी वर्गीय फसलों की उचित देखभाल करना अत्यंत आवश्यक है ताकि अधिक उत्पादन के साथ-साथ अच्छी गुणवत्ता वाली उपज प्राप्त की जा सके।

वर्षा ऋतु में उगाई जाने वाली प्रमुख सब्जियाँ

वर्षा ऋतु में अनेक सब्जी फसलों की खेती की जाती है, जिनमें प्रमुख रूप से भिंडी, बैंगन, मिर्च, टमाटर, लौकी, करेला, कद्दू, तोरई, खीरा, परवल, सेम, लोबिया, फूलगोभी तथा पत्तागोभी शामिल हैं। इन फसलों की सफल खेती के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन एवं नियमित देखभाल आवश्यक है।

वर्षा ऋतु का सब्जी उत्पादन पर प्रभाव

वर्षा ऋतु में पर्याप्त वर्षा होने से मिट्टी में नमी बनी रहती है, जिससे पौधों की वृद्धि अच्छी होती है। लेकिन लगातार या अत्यधिक वर्षा होने पर खेतों में जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इससे पौधों की जड़ों को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पाती और उनकी वृद्धि प्रभावित होती है। साथ ही विभिन्न प्रकार के फफूंदजनित रोग तथा हानिकारक कीट तेजी से फैलने लगते हैं। इसलिए इस मौसम में फसल प्रबंधन का विशेष महत्व होता है।

वर्षा ऋतु में सब्जी वर्गीय फसलों की देखभाल

1. खेत की उचित तैयारी एवं जल निकास व्यवस्था: वर्षा ऋतु में सबसे महत्वपूर्ण कार्य खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था करना है। खेत में अतिरिक्त पानी जमा होने से जड़ सड़न, तना गलन एवं अन्य रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए खेत को ऊँची क्यारियों पर तैयार करना चाहिए तथा पानी निकालने के लिए नालियाँ बनानी चाहिए। बेल वाली फसलों के लिए मेड़ों एवं मचान की व्यवस्था करना लाभदायक होता है।

2. गुणवत्तायुक्त बीज एवं स्वस्थ पौधों का चयन: अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए प्रमाणित एवं रोगमुक्त बीजों का प्रयोग करना चाहिए। नर्सरी में तैयार पौधों को खेत में लगाने से पहले उनकी अच्छी तरह जाँच कर लेनी चाहिए। रोगग्रस्त एवं कमजोर पौधों को हटाकर केवल स्वस्थ पौधों का ही रोपण करना चाहिए।

3. खरपतवार नियंत्रण: वर्षा ऋतु में खरपतवार अत्यधिक तेजी से बढ़ते हैं। ये फसल के साथ पोषक तत्वों, नमी और प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। परिणामस्वरूप फसल की वृद्धि और उत्पादन प्रभावित होता है। इसलिए नियमित अंतराल पर निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। खरपतवार नियंत्रण से मिट्टी में वायु संचार भी बेहतर होता है तथा पौधों की जड़ें स्वस्थ रहती हैं।

4. संतुलित उर्वरक प्रबंधन: बारिश के कारण मिट्टी में मौजूद पोषक तत्व बह जाते हैं, जिससे पौधों में पोषण की कमी हो सकती है। इसलिए जैविक खाद, गोबर की सड़ी हुई खाद तथा कम्पोस्ट का उपयोग करना चाहिए। रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कृषि विशेषज्ञों की अनुशंसा के अनुसार करना चाहिए। नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों को एक साथ देने के बजाय विभाजित मात्रा में देना अधिक लाभकारी होता है।

5. सिंचाई प्रबंधन: यद्यपि वर्षा ऋतु में सिंचाई की आवश्यकता कम होती है, फिर भी यदि वर्षा में अंतराल हो तो आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। दूसरी ओर, अधिक वर्षा होने पर खेत में जलभराव न होने दें। उचित नमी बनाए रखना पौधों के विकास के लिए आवश्यक है।

6. कीट प्रबंधन: वर्षा ऋतु में फल मक्खी, तना एवं फल छेदक कीट, माहू, सफेद मक्खी तथा थ्रिप्स जैसे कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। इनके नियंत्रण हेतु खेत का नियमित निरीक्षण करना चाहिए। पीले चिपचिपे ट्रैप, फेरोमोन ट्रैप तथा जैविक नियंत्रण उपायों का प्रयोग किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार करना चाहिए।

7. रोग प्रबंधन: अधिक नमी एवं तापमान के कारण झुलसा रोग, डाउनी मिल्ड्यू, पाउडरी मिल्ड्यू, जड़ गलन, फल सड़न तथा जीवाणुजनित रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है। रोग नियंत्रण के लिए निम्न उपाय अपनाने चाहिए—

- रोगमुक्त बीज एवं पौधों का उपयोग करें।
- फसल चक्र अपनाएँ।
- रोगग्रस्त पौधों एवं पत्तियों को हटाकर नष्ट करें।
- उचित दूरी पर पौधों की रोपाई करें।
- आवश्यकता पड़ने पर अनुशंसित फफूंदनाशकों का छिड़काव करें।

8. पौधों को सहारा प्रदान करना: टमाटर, मिर्च, सेम तथा बेल वाली सब्जियों में पौधों को सहारा देना आवश्यक होता है। इससे पौधे सीधे बढ़ते हैं, फल जमीन के संपर्क में नहीं आते तथा रोगों की संभावना कम हो जाती है। सहारा देने से पौधों में वायु संचार भी बेहतर होता है।

9. मल्चिंग का उपयोग: मल्चिंग तकनीक वर्षा ऋतु में विशेष रूप से लाभकारी होती है। पौधों के आसपास सूखी घास, पुआल या प्लास्टिक मल्च बिछाने से मिट्टी की नमी संरक्षित रहती है, खरपतवार कम उगते हैं तथा फलों का सड़ना कम होता है। इससे उत्पादन एवं गुणवत्ता दोनों में वृद्धि होती है।

10. समय पर तुड़ाई एवं विपणन: सब्जियों की समय पर तुड़ाई करना अत्यंत आवश्यक है। उचित अवस्था में तुड़ाई करने से उपज की गुणवत्ता बनी रहती है और बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त होता है। अधिक समय तक पौधों पर फल छोड़ने से उत्पादन क्षमता प्रभावित हो सकती है।

वर्षा ऋतु में किसानों के लिए विशेष सुझाव

1. खेत में नियमित निरीक्षण करें।
2. जल निकास की व्यवस्था सदैव बनाए रखें।
3. जैविक खादों का अधिकाधिक उपयोग करें।
4. रोग एवं कीट के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते ही नियंत्रण उपाय अपनाएँ।
5. कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग द्वारा जारी सलाह का पालन करें।
6. मौसम पूर्वानुमान के अनुसार कृषि कार्यों की योजना बनाएँ।
7. फसल अवशेषों को खेत में न छोड़ें, उन्हें नष्ट कर दें।

वर्षा ऋतु में सब्जी उत्पादन की चुनौतियाँ

- अत्यधिक वर्षा एवं जलभराव
- फफूंदजनित रोगों का तीव्र प्रकोप
- खरपतवारों की अधिक वृद्धि
- कीटों की संख्या में वृद्धि
- पोषक तत्वों का बहाव
- फल एवं फूलों का झड़ना

इन चुनौतियों का समाधान वैज्ञानिक खेती की तकनीकों को अपनाकर किया जा सकता है।

निष्कर्ष

वर्षा ऋतु सब्जी उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मौसम है, लेकिन इसके साथ कई समस्याएँ भी जुड़ी होती हैं। उचित जल निकास, संतुलित पोषण, खरपतवार नियंत्रण, कीट एवं रोग प्रबंधन, मल्चिंग तथा समय पर तुड़ाई जैसे उपाय अपनाकर किसान बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। वैज्ञानिक एवं आधुनिक कृषि तकनीकों के उपयोग से न केवल उपज में वृद्धि संभव है, बल्कि सब्जियों की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। अतः वर्षा ऋतु में सब्जी वर्गीय फसलों की नियमित एवं वैज्ञानिक देखभाल किसानों की आय बढ़ाने तथा टिकाऊ कृषि विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।